T D C Part II

TOPIC - PUBLIC EXPENDITURE, Paper IV Hons

Qus — आधुनिक काल में सार्वजनिक व्यय की वृद्धि के कारणों का उल्लेख कीजिए। क्या यह सर्वदा उचित है ?

अथवा — हाल के वर्षों में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारणों का विश्लेषण करें ?

अथवा - भारत में सार्वजनिक व्यय की वृद्धि के कारणों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए ? (Reasons for the Growth of Public Expediture)

Ans → सार्वजनिक व्यय सार्वजनिक क्रियाओं का आदि और अन्त है। क्लासिकल विचारकों और निर्बाधवादी विचारकों ने सार्वजनिक व्यय के विषय की अवहेलना की क्योंकि उनका ऐसा विश्वास था कि राज्य को आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार व्यक्तिवादी और अराजकतावादी विचारकों ने भी राज्य हस्तक्षेप को एक आवश्यक बुराई ही समझा तथा सरकारी व्यय को " जनता के धन का अपव्यय बताया। जे० बी० से (J.B. Say) के विचारानुसार " वित्त की सारी योजनाओं में सर्वोत्तम वह है जिसमें कम खर्च किया जाये। एडम स्मिथ का मत था कि राज्य के कार्य न्याय, प्रतिरक्षा और कुछ सार्वजनिक सेवाओं के प्रबंध तक सीमित रहने चाहिए। एक अमेरिकन आलोचक के मतानुसार " पुराने अंग्रेज लेखकों को व्यय के सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि सरकार के सम्बंध में उनका जो सिद्धान्त था उसका तात्पर्य था सरकारी कार्यों की एक निश्चित सीमा "।

इस प्रकार प्राचीन अर्थशास्त्री राज्य के कार्यों को सीमित रखना चाहते थे क्योंकि वे सरकारी कार्यों को प्राय अनुत्पादक तथा समाज को विशेष लाभ न देने वाले मानते थे। परन्तु आधुनिक युग में इस दशा में काफी परिवर्तन आ गया है तथा सार्वजनिक व्यय का महत्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है।

20 वीं शताब्दी में बढ़ते हुए सार्वजनिक व्यय को देखकर प्रो० फिण्डले शिराज ने कहा था " संक्षेप में बीसवीं शताब्दी में सार्वजनिक व्यय में इस अंश तक वृद्धि हुई है कि कुछ ही वर्ष पहले, उसे वित्तीय पागलपन का प्रतीक तथा विश्व सारव के टूटने की आवश्यक निशानी समझा गया होता," आधुनिक काल में केन्द्रिय तथा स्थानीय दोनों प्रकार के सरकारों के कार्यों में विस्तृत तथा गहन वृद्धि हुई है। वस्तुतः सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के एक नहीं बल्कि अनेक कारण है श्रीमती हिक्स ने सार्वजनिक व्यय में वृद्धि का सर्वाधिक मुख्य कारण हाल के वर्षों में आर्थिक एवं समाजिक व्यय में वृद्धि को माना है तो दुसरी और एलेन एवं ब्राउनली ने सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के लिए इन चार कारणों को मुख्य रूप से उत्तरदायी बताया है

राज्यों की जनसंख्या एवं क्षेत्र में वृद्धि, युद्ध तथा युद्ध की तैयारी- सामान्य मूल्य तल में अत्यधिक वृद्धि तथा आधुनिक जटिल समाज की तेजी से बढ़ी हुई आवश्यकताएँ। किन्तु प्रो० टेलर (Taylor) के अनुसार आधुनिक राज्यों के कार्यों में गहन तथा विस्तृत दोनों ही प्रकार की वृद्धि हुई है जिनके फलस्वरूप सार्वजनिक व्यय में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है सार्वजनिक व्यय में इस तीव्र वृद्धि के कारण निम्नांकित है।

(1) प्रतिरक्षा व्यय में वृद्धि (Increase in defence expenditure) प्रो० जे० के० मेहता (J.K. Mehta) के मतानुसार अस्त्र शस्त्र पर भारी व्यय किए जाने के कारण सार्वजनिक व्यय में कई प्रतिशत वृद्धि हो गई है। अणुशक्ति के विकास, जल और वायु सेना के उपभोग, युद्ध की विशालता के कारण युद्ध का खर्चा अकल्पनिक हो गया है। अतएव युद्ध संचालन की व्ययपूर्णता तथा युद्ध की बढ़ी हुई संभावनाओं के कारण प्रत्येक राष्ट्र की प्रतिरक्षा पर भारी मात्रा में व्यय करना पड़ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमारे देश में संघ सरकार की बजट का लगभग 50 प्रतिशत भाग प्रतिरक्षा पर व्यय किया जाता था

(2) आर्थिक अवसाद (Economics depression) सार्वजनिक व्यय आर्थिक मंदी को रोकने का एक प्रभावशाली अस्त्र सिद्ध हो चुका है, संयुक्त राज्य अमेरिका की New Deal Policy इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। जिसके कारण भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

(3) — कीमतों के बढ़ने की प्रवृत्ति (Rising trend of prices) द्वितीय महायुद्ध के बाद से लगभग प्रत्येक देश में मूल्य स्तर में वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। मूल्य स्तर में वृद्धि होने के साथ ही सरकारें इस बात के लिए बाध्य हो जाती है कि वे उन वस्तुओं व सेवाओं के लिए अधिक धन का भुगतान करें जिन्हें वे चाहती है और सरकारी कर्मचारियों के वेतन तथा मंहगाई भत्ते में वृद्धि करें यह स्थिति सरकारी व्यय को और विस्तार करती है।

(4) — आवश्यकताओं की सामूहिक संतुष्टि (Collective satisfaction of wants) आजकल आवश्यकताओं की सामूहिक संतुष्टि को विशेष महत्व दिया जाता है क्योंकि एक तो इसमें मितव्ययिता होती है और दूसरे नागरिक अनेक तरह की असुविधाओं से मुक्त हो जाते हैं। यही कारण है कि आजकल बिजली आपूर्ति, जल की पूर्ति यातायात की व्यवस्था आदि राज्य द्वारा संचालित की जाती है जिससे सरकारी व्यय की मात्रा में वृद्धि हुई है।

(5) राज्य की कार्यक्षमता में वृद्धि (Increase in the Efficiency of State)

अनेक क्षेत्रों में निजी ~~संस्था~~ संस्थाओं की अपेक्षा सार्वजनिक संस्थाओं की कार्यक्षमता में वृद्धि हो गई है। क्योंकि निजी संस्थाओं के सामने मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है जबकि सार्वजनिक संस्थाओं के सामने जनता का अधिक से अधिक कल्याण करना मुख्य उद्देश्य होता है।

(6) → जनसंख्या में वृद्धि (Increase in Population) सार्वजनिक ~~व्यय~~ के व्यय में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण जनसंख्या दर में तीव्र वृद्धि भी है। विगत वर्षों में विश्व की जनसंख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विगत 45 वर्षों में विश्व की जनसंख्या 155 करोड से बढकर 415 करोड हो गई है। भारत की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार 68.38 करोड हो गई है। भारत की आबादी में लगभग 2.5 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। सरकार को बढती हुई जनसंख्या के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, आवास आदि पर काफी मात्रा में व्यय करना पडता है।

(7) → जनतंत्रीय शासन पद्धति का विकास (Growth of the Democratic form of Government) – जनतंत्रीय शासन पद्धति के प्रादुर्भाव के कारण भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है। एक तो इस शासन प्रणाली में विधान मण्डल आदि पर बडी मात्रा में व्यय होता है और दूसरे जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए सरकार होने के नाते सरकार को जनहित के लिए सभी कार्य करने पडते है। जनतंत्रीय शासन मे सत्तारूढ दल को अपने पक्ष में करने हेतु जनता की सभी सुख सुविधायें जुटानी पडती है और कभी कभी विरोधी राजनैतिक दलों का मुँह बन्द करने हेतु अनावश्यक व्यय भी करना पडता है।

(8) → राष्ट्रीय आय में वृद्धि (Increase in National Income) विगत वर्षों में पुनर्निर्माण और आर्थिक विकास के कारण लगभग सभी देशों की राष्ट्रीय आय और संपन्नता बढी है। फलतः एक ओर सरकार जनता से प्रचुर मात्रा में आय प्राप्त करने में समर्थ हो गयी है तथा जनता भी सरकार से अपने लिए अधिक सुख सुविधाओं की माँग करने लगी है। अतएव इन दोनों कारणों से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

(9) कल्याणकारी राज्य की भावना का विकास (Growth of the Spirit of welfare-state) आजकल राज्य को ही सर्वेसर्वा समझा जाता है तथा यह विश्वास किया जाता है कि राज्य के ऊपर अपने नागरिकों के जीवन संचालन और विकास का पूरा उत्तरदायित्व है। आजकल प्रत्येक देश की सरकार के सामने कल्याणकारी राज्य की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य है तथा कल्याणकारी क्रियाओं के रूप में सरकार ने बेकारी बीमा, स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना बीमा, वृद्धावस्था पेंशन, प्रसव लाभ, बीमारी बीमा, निःशुल्क शिक्षा और चिकित्सा आदि का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है। इन सब कार्यों को सम्पन्न करने के ~~लिए~~ कारण सार्वजनिक

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

(10) – उद्योगों का समाजीकरण (Socialization of industries) :– समाजवादी प्रवृत्ति के प्रसार के फलस्वरूप आजकल सार्वजनिक उपक्रम का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है। प्रमुख पूंजीवादी देशों में भी अनेक आवश्यक एवं सुरक्षा संबंधी उद्योगों का स्वामित्व और संचालन राज्य सरकार द्वारा होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमारे देश में उद्योगों की स्थापना की गई है जिसके कारण भी सार्वजनिक व्यय के आकार में वृद्धि हुई है।

(11) आर्थिक नियोजन (Economic Planing) समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में नियोजन एक प्रमुख लक्षण होता है, मिश्रित देश में भी देश के सर्वांगीण विकास के ध्येय से आर्थिक नियोजन की नीति अपनाई जाती है। आर्थिक नियोजन की केन्द्रिय व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न विकास कार्यक्रमों और विकास परियोजनाओं को पूरा करने हेतु अपार धन की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति के लिए सरकार को हर संभव साधनों का सहारा लेना पड़ता है। जिससे सार्वजनिक व्यय में बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है।

(12) – ब्याज तथा ऋण की अदायगी (Debit servicing) :– कार्यमूलक वित्त व्यवस्था के अन्तर्गत घाटे के बजट को सामान्य स्वीकृति प्रदान की गयी है राज्य अपनी आय से अधिक व्यय करता है और इसके लिए देश के आंतरिक अथवा वाह्य स्त्रोतों से ऋण लेता है। अतः ऋण पर देय भुगतान एवं मूलधन की वापसी पर भी राज्य की आय का एक बड़ा भाग व्यय किया जाता है।

(13) प्रतिरक्षा की समस्या (Problem of defence) – इसमें कोई दो मत नहीं है कि देश की प्रतिरक्षा की समस्या सरकारी खर्च में वृद्धि का एक एक प्रमुख कारण बन गई है। कोई देश अपनी प्रतिरक्षा के लिए सेनाओं को शक्तिशाली बनाना चाहता है तो दूसरे केवल आत्मरक्षा के लिए ऐसा कदम उठाने को विवश हो जाते हैं। युद्ध सम्बंधी हथियारों का निर्माण तथा सेना के रख रखाव पर भारी धनराशि व्यय करनी पड़ती है। फिर युद्ध लड़ने की विधियों में दिन रात जो परिवर्तन होते रहते हैं उसके कारण भी सेना को नये नये हथियारों की आवश्यकता होती है। इससे राज्य पर खर्च का भार बढ़ता है। प्रतिरक्षा व्यय में केवल सैनिक एवं सैनिक सामग्री का व्यय ही सम्मिलित नहीं होता है बल्कि सैनिकों की पेन्शन तथा युद्ध हेतु लिए गये ऋण पर भी ब्याज भी शामिल होता है। युद्ध के विज्ञान और कला में इतनी अधिक प्रगति हुई है कि आज के शस्त्र कल अप्रचलित एवं पुराने हो जाते हैं जिससे युद्ध व्यवस्था बड़ी खर्चीली हो गयी है। अमेरिका में कुल उपभोग बजट का 30% भाग प्रतिरक्षा पर व्यय किया जाता है। भारत में कुल राष्ट्रीय आय का 3.5% पाकिस्तान में 4% तथा दक्षिण कोरिया में 6% राशि प्रतिरक्षा पर व्यय की जाती है।

(14) उत्पादक को सरकारी सहायता :- आजकल प्रत्येक देश की सरकार अर्थव्यवस्था को आत्म निर्भर बनाने के ध्येय से उत्पादन को बढ़ाने और प्रोत्साहित करने हेतु छोटे छोटे उत्पादकों को वित्तीय और तकनीकि सहायता प्रदान करती है तथा उनके लिए ऋण की भी व्यवस्था करती है। राज्य सरकार की इस प्रवृत्ति के कारण भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

(15) :- नागरिक प्रशासन (civil administration) जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि शहरीकरण और सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना के विकास के कारण राज्य का कार्य बहुत बढ़ गया है। राज्य के कार्यों में गहनता एवं विस्तार के साथ ही साथ राज्य के प्रशासनिक ढाँचे में तथा सरकार द्वारा गठित निकायों, नियंत्रण व्यवस्था, सामान्य सेवाओं आदि के क्षेत्र में विस्तार हुआ है और राजकीय कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि भी हुई है जिससे उनके वेतन भत्ते आदि पर व्यय में वृद्धि स्वाभाविक है। भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों में कर्मचारियों की संख्या में पिछले 40 वर्षों में 17 गुना और उनके वेतन आदि मद में 58 गुना वृद्धि हुई है।

(16) कृषि विकास (Development of Agriculture) :- भारत जैसे विकासशील देश की अर्थव्यवस्था का कृषि विकास उसकी अर्थव्यवस्था की धुरी है। आर्थिक विकास के लिए कृषि तथा गैर कृषि दोनों क्षेत्रों के विकास के लिए सुविधाएँ प्रदान करना आवश्यक होती है क्योंकि दोनों क्षेत्र परस्पर निर्भर करते है। भारत जैसे देश में आर्थिक एवं सामाजिक विकास को द्रुतगति प्रदान करने के लिए कृषि ढाँचे को मजबूत करना जरूरी है। इसलिए विकासशील देश अपने कृषि विकास के लिए बड़ी मात्रा में राशि व्यय कर रहे है। इसलिए सरकार किसानों को कम ब्याजदर पर ऋण प्रदान करना, निर्धनों को अनुदान, कृषिगत वस्तुओं का निर्धारित मूल्य पर क्रय, ट्रैक्टर सुविधा प्रदान करना इत्यादि सुविधाओं पर व्यय करती है। इसके अतिरिक्त सरकार कृषि अनुसंधान एवं कृषिगत साधनों के निर्माण पर काफी मात्रा में व्यय करती है।

(17) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग (International cooperation) :- अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के अन्तर्गत प्रत्येक सरकार किसी न किसी देश को ऋण अनुदान एवं अन्य आर्थिक सहायता देती है। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ जैसे I.M.F, I.B.R.D. UNICEF आदि संस्थाओं को भी समय समय पर सदस्यता शुल्क देना पड़ता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बनाए रखने के लिए सरकार को अधिक व्यय करना पड़ता है।

सार्वजनिक व्यय की वृद्धि पर नियंत्रण नहीं रखने पर कई तरह के बुरे परिणाम सामने आ जाते हैं। भारत में सार्वजनिक व्यय की वृद्धि के परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति की स्थिती उत्पन्न हुई है कालाबाजारी बढ़ी है तथा कालाधन को प्रोत्साहन मिला है। भारत सरकार को अपने व्यय के बढ़ने के कारण ही घाटे की वित्त व्यवस्था तथा विदेशी ऋण पर निर्भर करना पड़ रहा है। डर इस बात का है कि भारत ऋण फन्दा (Debt Trap) में न फँस जाये। इसलिए सार्वजनिक व्यय की वृद्धि को सर्वदा उचित नहीं माना जा सकता है। वस्तुतः सार्वजनिक व्यय में तभी तक वृद्धि करनी चाहिए जब तक कि इससे अधिकतम सामाजिक लाभ की प्राप्ति होती है।

समाप्त

N. Ram
Assistant professor
R.B.G.R college
maharajganj